आचार्यश्री तुलसी के जन्मशताब्दी महोत्सव वर्ष 2013–2014 में संस्थापित

जैनविद्या एवं विज्ञान अध्ययन केन्द्र,उदयपुर

[Study Centre for Jainology and Science, Udaipur]

श्री जैन श्वेताम्बर तेरापंथ सभा, उदयपुर की एक इकाई के रूप में संचालित

दिनांक 7 जून 2013 को उदयपुर में सम्पन्न संस्थापक सदस्यों की बैठक में स्वीकृत

प्रस्तावित योजना

1. प्रस्तावना :

जैन धर्म विश्व का प्राचीनतम धर्म है। जैन धर्म के सिद्धान्त सर्वोदयी होने के साथ–साथ पृथ्वी के वातावरण को सुरक्षित रखने की सामर्थ्य रखते हैं । अहिंसा, अपरिग्रह और अनेकांत के सिद्धान्त मानव और समाज के जीवन में सुख और शांति के स्रोत हैं । जैन धर्म की सम्पूर्ण अवधारणाा वैज्ञानिक पद्धति पर आधारित है फिर भी आधुनिक विज्ञान और दर्शन में इसका कोई स्थान नहीं है। क्योंकि आज विश्व में इसकी जानकारी अति न्यून है ।

जैन परम्परा के अन्य प्रभावी संतो के अतिरिक्त आचार्य श्री तुलसी और आचार्य श्री महाप्रज्ञ ने जैन धर्म को विश्व और राष्ट्रीय पटल पर स्थापित करने का पर्याप्त कार्य किया है एवं आचार्यश्री महाश्रमण जी इस क्षेत्र में जैनविद्या के विकास हेतु सक्रियरूप से प्रयत्नशील हैं। फिर भी इस दिशा में अभी बहुत कुछ किया जाना शेष है । मानवकल्याण के लिए जैन धर्म का प्रसार बहुत महत्वपूर्ण है। इसके सिद्धान्तों को आधुनिक परिप्रेक्ष्य में व्याख्यायित करने और दैनिक जीवन में इसकी उपयोगिता सिद्ध करना हमारी प्राथमिकता होनी चाहिए । आज की आवश्यकता है कि जैन धर्म के सिद्धान्तों को हम विश्व के कौने–कौने में पहुंचायें और मानव जीवन में सुख और शांति स्थापित करने में अपना योगदान दें ।

अक्टूबर 2012 में जसैल में आयोजित संगोष्ठी के अवसर पर इस सम्बन्ध में परमपूज्य अनुशास्ता आचार्यश्री महाश्रमण जी से विगत कुछ महिनों में उदयपुर के प्रबुद्ध श्रावकों और विद्वानों का गहन विचार–विमर्श हुआ है। उन्होंने जैन दर्शन को जनजीवन में उपयोगी बनाने, जैनविद्या के वैज्ञानिक एवं ऐतिहासिक पक्ष उजागर करने तथा उसकी विरासत को संरक्षण देने के लिए समाज में एक सक्रिय शोध केन्द्र के संचालन हेतु अपना आशीर्वाद प्रदान किया था। उस दिशा में उदयपुर में पर्याप्त चिंतन–मनन के उपरान्त प्रस्तावित **जैनविद्या एवं विज्ञान अध्ययन केन्द्र [Study Centre for Jainology and Science]** की योजना इसी दिशा में एक प्रयास है। यह अपेक्षा की जाती है कि जैन धर्म के सभी सम्प्रदाय इस महत्त्वपूर्ण केन्द्र की स्थापना और संचालन में अपना सहयोग प्रदान करेंगे जिससे जैन धर्म विश्व में अपना अपेक्षित स्थान प्राप्त करने में हम सभी सफल हो सकें। यह केन्द्र इस प्रयोजन को पूरा करने के अतिरिक्त विद्वानों और कार्यकर्ताओं को अपना योगदान देने हेतु एक मंच भी प्रदान करेगा ।

2. केन्द्र के उद्देश्य :

इस केन्द्र के प्रमुख उद्देश्य निम्नानुसार होंगे :–

1. जैन धर्म को विश्व के सभी समुदाय हेतु सर्व सुलभ रूप में प्रस्तुत करना ।
2. जैन साहित्य, फिल्म, वेबसाइट, सीडी और अन्य उपयोगी साधन उपलब्ध कराना ।
3. जैन धर्म और आधुनिक विज्ञान का जाति, पंथ से उपर उठ कर तुलनात्मक अध्ययन करना ।
4. इस क्षेत्र में कार्यरत अन्य संस्थाओं एवं विद्वानों से सम्पर्क करना और आपसी सहयोग को प्रोत्साहन देना ।
5. जैन धर्म के प्रसार हेतु अभ्यर्थियों को शिक्षा और प्रशिक्षण देना ।
6. जैनविद्या, विज्ञान एवं प्राकृत, अपभ्रंश आदि भाषाओं के विद्वानों का सम्मान, शोधवृति, आदि प्रदान करना ।
7. जैनविद्या की महत्वपूर्ण पाण्डुलिपियों के सर्वेक्षण, संरक्षण, सम्पादन, प्रकाशन आदि के कार्य में संलग्न संस्थाओं एवं विद्वानों को यथासंभव सहयोग/जानकारी प्रदान करना।
8. जैन इतिहास, पुरातत्व, कला आदि के कार्य में संलग्न संस्थाओं एवं विद्वानों को यथासंभव सहयोग/जानकारी/ सम्मान, शोधवृति, आदि प्रदान करना।
9. ऐसे अन्य सम्बन्धित उन सभी कार्यों में यथासंभव सहयोग/जानकारी प्रदान करना, जो जैनविद्या के विकास और इस केन्द्र के हित और उद्देश्यों के अनुरूप हों।

3.प्रधान कार्यालय एवं भवन :

वर्तमान में इस प्रस्तावित केन्द्र का कार्यालय निम्न पते पर संचालित होगा–

जैनविद्या एवं विज्ञान अध्ययन केन्द्र
[Study Centre for Jainology and Science]
श्री जैन श्वेताम्बर तेरापंथ सभा भवन
नाईयों की तलाई, उदयपुर–313001

श्री जैन श्वेताम्बर तेरापंथ सभा, उदयपुर इस केन्द्र के कार्यालय के लिए प्रारम्भ में अपने सभा भवन में इतना स्थान उपलब्ध करायेगी–

1. निदेशक, संयुक्त निदेशक एवं कोषध्यक्ष कक्ष – एक
2. शोध अधिकारी एवं कम्प्यूटर कक्ष– एक
3. शोध सहायक एवं पुस्तकालय हेतु बड़ा कक्ष– एक

आवश्यकता एवं साधन के अनुसार केन्द्र का कार्यालय–स्थल परिवर्तित भी हो सकता है।

4.व्यवस्थातंत्र :

प्रस्तावित यह केन्द्र **श्री जैन श्वेताम्बर तेरापंथ सभा, उदयपुर** के अंतर्गत एक इकाई होगा । इसके स्थान, साधन और वित्त की आवश्यकता की पूर्ति का दायित्व सभा का होगा । इस प्रयोजन हेतु एक स्थायी कोष बनाने की व्यवस्था तथा दान के माध्यम से समाज से सहयोग प्राप्त करने की अपेक्षा होगी । विभिन्न परियोजनाओं प्रोजेक्ट के माध्यम से सरकारी और अन्य संस्थाओं से भी सहयोग प्राप्त करने का प्रयास अपेक्षित होगा । इस केन्द्र में संचालित शोध/अध्ययन कार्य के लिए जैन विश्व भारती, लाडनूं ,मोहनलाल सुखाड़िया विश्वविद्यालय, उदयपुर तथा अन्य संस्थानों से सम्बद्धता/मान्यता भी प्राप्त की जा सकती है ।

5.केन्द्र की गतिविधियां :

अपने लक्ष्य की प्राप्ति हेतु यह केन्द्र निम्नलिखित गतिविधियां आयोजित करेगा :

1. अनुसंधान/अध्ययन कार्य हेतु एक डाटा बैंक तैयार करना तथा शोधार्थियों को आवश्यकतानुसार अध्ययन सामग्री उपलब्ध कराना । जैसे :–
    - जैनविद्या क्षेत्र में शोधरत संस्थाएं और उनकी जानकारी
    - जैनविद्या के विद्वानों और अध्येताओं की जानकारी
    - जैन विद्या पर प्रकाशित पुस्तकें और साहित्य की जानकारी
    - शोध पत्र, आलेख, थीसीस आदि संदर्भ संग्रहित करना
    - जैनविद्या की महत्वपूर्ण पाण्डुलिपियों के सर्वेक्षण, संरक्षण, सम्पादन, प्रकाशन आदि के कार्य में संलग्न संस्थाओं एवं विद्वानों को यथासंभव सहयोग/जानकारी प्रदान करना।
2. समय–समय पर संगोष्ठी, सम्मेलन, अधिवेशन, कार्यशाला आदि आयोजित करना ।
3. इन विषयों पर प्रमाणपत्र, डिप्लोमा आदि पाठ्यक्रमों को संचालित करना । जैसे –
    - जैन आगम, संस्कृत, प्राकृत, अपभ्रंश साहित्य आदि
    - जैन धर्म और विज्ञान
    - योग और प्रेक्षा–ध्यान
    - जैन दर्शन और पर्यावरण
    - जीवन विज्ञान
    - जैन दर्शन और नैतिक जीवन आदि
    - पाण्डुलिपि विज्ञान
4. ऑन–लाईन पाठ्यक्रम चलाना
5. विद्वानों के लिए विशेष पाठ्यक्रम का आयोजन करना
6. तकनीकी शब्दावली और डिजीटल शब्द कोष तैयार करना
7. बालकों और युवाओं के लिए हिन्दी, अंग्रेजी में पुस्तकें तथा सीडी तैयार करना
8. डाक्यूमेन्ट्री फिल्मों का निर्माण करना
9. अन्य राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय संस्थाओं से संबंध बनाना और सहयोग प्राप्त करना
10. निम्नलिखित दिशा में शोध कार्य करना
    - जैन विद्या और विज्ञान का तुलनात्मक अध्ययन
    - जैन दर्शन और मनोविज्ञान
    - सामाजिक विज्ञान और जैन दर्शन
    - पर्यावरण संरक्षण और वातावरण सुरक्षा में जैन दर्शन की भूमिका
    - वैज्ञानिक शोध हेतु प्रयोगशाला स्थापित करना
    - अन्य विश्वविद्यालयों और संस्थानों के संयुक्त तत्वावधान में शोधकार्य एवं अध्ययन को प्रोत्साहन देना
11. अंतराष्ट्रीय स्तर की शोध–पत्रिका, मेगजिन आदि का प्रकाशन करना
12. विद्यार्थियों और युवाओं हेतु राष्ट्रीय स्तर पर प्रतियोगिता, अवार्ड आदि आयोजित करना ।

6.पुस्तकालय एवं वाचनालय :

जैनविद्या एवं विज्ञान अध्ययन केन्द्र का एक समृद्ध पुस्तकालय एवं वाचनालय होगा, जिसमें आवश्यक शोध सामग्री एकत्र करने का प्रयत्न रहेगा।

7.स्टाफ–

इस केन्द्र में नियमित तथा अंशकालिक स्टॉफ की व्यवस्था होगी

1. नियमित स्टॉफ
   - निदेशक (मानद), – 1
   - संयुक्त निदेशक (मानद), – 1
   - कोषाध्यक्ष (मानद) – 1
   - वरिष्ठ शोध अधिकारी – 1
   - कनिष्ठ शोध अधिकारी – 1
   - कम्प्युटर एक्सपर्ट – 1
   - शोध सहायक एवं पुस्तकालय प्रभारी – 1

   आचार्य श्री महाश्रमण जी से निवेदन करके दो समणियों को केन्द्र के उक्त कार्य हेतु आमंत्रित कर उनकी अकादमिक सेवाएं लेना वांछित होगा ।
   प्रारम्भ में संस्थापक सदस्यों से भी उच्च पदों पर अवैतनिक सेवाएं देने का आग्रह करना उचित होगा ।
2. अंशकालिक स्टॉफ –
   - चतुर्थ श्रेणी कर्मचारी – 1
   - अतिथि संकाय – आवश्यकतानुसार
   - विजिटिंग फेकल्टी और विद्वान – आवश्यकतानुसार
   - शोध–सहायक – प्रोजेक्ट की आवश्यकतानुसार

8. भवन और आर्थिक संसाधन–

श्री जैन श्वेताम्बर तेरापंथ सभा, उदयपुर आवश्यक भवन, कार्यालय सुविधाएं व अन्य संसाधन उपलब्ध करायेगी । अर्थ व्यवस्था का उत्तरदायित्व भी सभा का होगा । यह वांछनीय होगा कि इस प्रयोजन हेतु एक स्थायी कोष बनाया जाय । प्रारम्भ में केन्द्र के नाम से बैंक में लगभग 50–60 लाख रू. का स्थायी कोष बनाने का लक्ष्य रखा गया है, जिसके व्याज से केन्द्र का वार्षिक व्यय पूरा किया जा सके।

9.वार्षिक बजट/व्यय

(अ) नॉन रेकरिंग व्यय :

- तीन कम्प्यूटर सेट, टेबल, कुर्सी, अलमारी, फोन आदि ।

(ब) रेकरिंग व्यय

• वरिष्ठ शोध अधिकारी	25,000/–रु. प्रतिमाह	3, 00,000
• कम्प्यूटर एक्सपर्ट एवं शोध सहायक	15,000/–रु. प्र.मा.	1, 80,000
• अंशकालिक चतुर्थ श्रेणी कर्मचारी	3000/–रु. प्र.मा.	36, 000
• अन्य व्यय, स्टेशनरी, पोस्टेज, पुस्तक खरीद, यात्रा व्यय आदि		1, 00, 000
		6, 16, 000 प्रतिवर्ष
• अतिथि संकाय, विजिटिंग फेकल्टी, विद्वान आदि		84, 000 प्रतिवर्ष
		7, 00 000/ प्रतिवर्ष

नोट : केन्द्र का यह प्रारम्भिक **वार्षिक बजट/व्यय** यथायोग्य संशोधित भी किया जा सकता है।

10.प्रबन्ध व्यवस्था–

1. संरक्षक – आचार्य श्री महाश्रमण जी या उनका प्रतिनिधि –
2. संस्थापक सदस्य – निम्नलिखित संस्थापक सदस्य प्रस्तावित हैं– :–

1.	डॉ देव कोठारी	उदयपुर
2.	श्री लक्ष्मण सिंह कर्णावट,	उदयपुर
3.	डॉ. के.एल. तोतावत	उदयपुर
4.	श्री राजकुमार फत्तावत	उदयपुर
5.	डॉ. प्रेमसुमन जैन	उदयपुर
6.	डॉ. पारसमल अग्रवाल	उदयपुर
7.	डॉ. नारायण लाल कछारा	उदयपुर
8.	डॉ. सोहन लाल तातेड़	जोधपुर
9.	डॉ. टी. एम. दक	उदयपुर
10.	श्री सबाईलाल पोखरणा	फतहनगर
11.	डॉ. जिनेन्द्र कुमार जैन	उदयपुर

सभी संस्थापक सदस्य केन्द्र के कार्य में विशेष रूचि लेंगे और इसकी योजनाओं को सफल बनाने में अपना पूर्ण सहयोग और योगदान देंगे । निदेशक (मानद), संयुक्त निदेशक (मानद), कोषाध्यक्ष (मानद) केन्द्र के अवैतनिक अधिकारी होंगे, किन्तु उन्हें आवश्यकतानुसार यात्राव्यय आदि प्रबन्ध समिति की स्वीकृति से दिया जा सकता है।

11.प्रबन्ध समिति :–

इस केन्द्र के कार्य को सुचारू रूप से चलाने और दिशा–निर्देश हेतु एक प्रबन्ध समिति का गठन किया जाएगा । इसके सदस्य निम्नानुसार होंगे–

1.	अध्यक्ष तेरापंथ सभा	–	अध्यक्ष 1
2.	केन्द्र निदेशक	–	सचिव 1
3.	संस्थापक सदस्य	–	सदस्य 8
4.	संरक्षक द्वारा नामित सदस्य	–	सदस्य 1
5.	केन्द्र कोषाध्यक्ष(संस्थापक सदस्यों से नामित)	–	सदस्य 1
6.	केन्द्र संयुक्त निदेशक (मानद)	–	सदस्य 1

यह प्रबन्ध समिति केन्द्र के लिए नियम, उपनियम तथा लक्ष्य प्राप्ति हेतु दिशा–निर्देश तैयार करेगी । केन्द्र के लिए बजट बनाना, स्टॉफ की नियुक्ति करना, ऑडिट कराना तथा संसाधन की व्यवस्था करना समिति का उत्तरदायित्व होगा । निदेशक केन्द्र का कार्यकारी अधिकारी होगा। समिति की वर्ष में कम से कम एक बैठक होगी । किसी विवाद की स्थिति में केन्द्र के संरक्षक पू. अनुशास्ता जी निर्णय सबको मान्य होगा।

12.परामर्श मंडल–

केन्द्र के कार्य–निर्धारण हेतु एक परामर्श मंडल का गठन किया जाएगा । इसके सदस्य निम्नानुसार होंगे –

1. उपकुलपति, जैन विश्व भारती विश्वविद्यालय, लाडनूँ	–	सदस्य
2. संस्थापक सदस्य	–	8 सदस्य
3. केन्द्र निदेशक	–	सचिव
4. मोहललाल सुखाड़िया विश्वविद्यालय में प्राकृत और जैन विद्या विभाग के विभागाध्यक्ष	–	सदस्य
5. जैन विद्या के विद्वान नामित	–	6 सदस्य

परामर्श मंडल केन्द्र के कार्य की समीक्षा के अनुसार भविष्य की योजनाओं पर अपने सुझाव देगा । परामर्श मंडल की संस्तुतियाँ प्रबंध समिति में स्वीकृति हेतु रखी जाएगी । परामर्श मंडल की वर्ष में कम से कम एक बैठक होगी ।

13.विद्वान सदस्य [Scholar Fellows]

केन्द्र के कुछ विद्वान **सदस्य** होगें। विभिन्न धर्मों और समाज के कार्यकर्ताओं और विद्वानों तथा केन्द्र के कार्य में रूचि रखने वाले महानुभावों को विद्वान **सदस्य** बनाया जाएगा। इन सदस्यों से निरन्तर सम्पर्क बनाये रखा जाएगा । उन्हें केन्द्र के कार्य की सूचना दी जाएगी तथा उनके सुझाव भी आमंत्रित किए जायेंगे ।

परामर्श मंडल एवं विद्वान सदस्य के लिए कुछ विद्वानों के नाम

1. डॉ. सोहनराज तातेड़, जोधपुर
2. डॉ. नरेन्द्र भण्डारी, अहमदाबाद
3. डॉ. सुरेन्द्रसिंह पोखरना, अहमदाबाद
4. डॉ. सुधीर शाह, अहमदाबाद
5. डॉ. राजमल जैन, अहमदाबाद
6. डॉ विनय जैन, गुड़गांव
7. डॉ. दयानन्द भार्गव, जयपुर
8. डॉ. अनुपम जैन, इन्दौर
9. डॉ. शुगन जैन, दिल्ली
10. डॉ. सुलेख जैन, अमेरिका
11. डॉ. पी.सी. जैन, दिल्ली
12. विभागाध्यक्ष, जैनविद्या विभाग,
    जैन विश्व भारती विश्वविद्यालय, लाडनूं
13. डॉ. रूडी जान्समा, जयपुर
14. डॉ. जीतुभाई शाह, अहमदाबाद
15. डॉ. धर्मचन्द जैन, जोधपुर
16. डॉ. संजीव भानावत, जयपुर
17. डॉ. श्रेयांस कुमार जैन, जयपुर
18. डॉ. विजय कुमार जैन, लखनऊ
19. डॉ. वीरसागर जैन, दिल्ली
20. डॉ. सुरेश सिसोदिया, उदयपुर
21. डॉ. सुषमा सिंघवी, जयपुर
22. डॉ. कुसुम जैन जयपुर
23. डॉ. कल्पना जैन, दिल्ली
24. डॉ. सलोनी जोशी, अहमदाबाद
25. डा. सुभाष कोठारी उदयपुर